प्रश्न : अभिवृति परिवर्तन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर : व्यक्ति के नियंत्रित भाव, विचार और कार्य करने की पूर्ववृति को अभिवृति या मनोवृति के नाम से जाना जाता है। यद्यपि, सामान्य रुप से मनोवृत्तियाँ तीव्र, संगत एवं उपयोगी होती हैं तथा उनमें परिवर्तन का प्रतिरोध होता है, फिर भी मनोवृतियों में परिवर्तन होता है, हालाँकि यह परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है। वस्तुतः अभिवृति की प्रकृति गत्यात्मक होती है तथा जीवन के विविध पड़ावों पर उनमें सहज ही परिवर्तन संभव होता है। अभिवृति परिवर्तन में समाज, संस्था, संस्कृति आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

निम्नलिखित अवस्थाओं में अभिवृति में परिवर्तन होता है –

(i) जब एक व्यक्ति की घनिष्ठता किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु से हो जाती है तो व्यक्ति में उस अन्य व्यक्ति या वस्तु के प्रति अभिवृति में परिवर्तन होता है।

(ii) व्यक्ति के स्पष्ट व्यक्तिगत अनुभव भी अभिवृति में परिवर्तन लाते हैं।

(iii) शिक्षा अभिवृति में परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक है।

(iv) संचार-साधनों का विकास भी अभिवृति में परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ है।

(v) महान् व्यक्तित्व के प्रभाव तथा जीवन में घटने वाली सार्थक घटनाओं के कारण भी अभिवृति में परिवर्तन होता है।

→ प्रश्न : मनोवृत्ति में परिवर्त्तन लाने वाले कारकों का वर्णन कीजिए।

→ *अथवा,* मनोवृत्ति के निर्माण को प्रभावित करने वाले तत्त्वों का वर्णन करें।

अथवा, क्या मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाना सम्भव है? कैसे?

उत्तर : व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ आयु और अनुभवों के बढ़ने के साथ-साथ विकसित होती रहती है। एक समूह के सदस्यों की कुछ अभिवृत्तियाँ समान होती हैं तथा कुछ भिन्न भी होती हैं। अभिवृत्तियों का विकास व्यक्ति के स्वस्थ व्यक्तित्व के विकास में सहायक है। निम्नलिखित कारक अभिवृत्तियों के विकास में सहायक हैं–

1. प्रेरणात्मक कारक : अभिवृत्तियों के विकास में जैविक और सामाजिक दोनों ही प्रकार की प्रेरणाएँ सहायक होती हैं। अभिवृत्तियों का विकास और निर्माण व्यक्ति की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि पर भी निर्भर करता है।

Scanned with CamScanner

2. सूचना एवं प्रचार (Information and propaganda) : जिस उत्तजना के सम्बन्ध में व्यक्ति को सूचनाएँ जितनी ही अधिक मिलती हैं या वह प्रचार अधिक देखता है उस उत्तेजना के सम्बन्ध में उसमें अभिवृत्तियों का निर्माण जरूरी हो जाता है। आधुनिक युग में मनोवृत्तियों के परिवर्तन के लिए प्रचार का प्रयोग अधिक किया जाता है।

3. समूह प्रभाव (Group effects) : व्यक्ति जिस समूह में रहता है इसी समूह का उसके समाजीकरण पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। समाजीकरण प्रक्रिया में वह तादात्म्य (Identification) को मुख्य रूप से अपनाता है। इसी तादात्म्य के आधार पर यह समूह के विश्वास, मूल्य और प्रतिमानों को सीखता है। समूह का विश्वास भी अभिवृत्तियों के निर्माण और विकास में सहायक होते हैं।

4. व्यक्तित्व (Personality) : अभिवृत्तियों के निर्माण और विकास में व्यक्तित्व भी एक प्रमुख कारक है। इसे फ्रेन्च ने अपने अध्ययन द्वारा सिद्ध कर दिया है।

5. सामाजिक सीखना और सामाजिक संस्थाएँ (Social learning and social institutions) : परिवार, स्कूल, मन्दिर, चर्च आदि समाज की कुछ ऐसी संस्थाएँ हैं जहाँ पर व्यक्तियों को सामाजिक शिक्षण दिया जाता है। यह सामाजिक शिक्षण भी अभिवृत्तियों के निर्माण और विकास में सहायक है।

6. प्रत्यक्षात्मक कारक (Perceptual factors) : अभिवृत्तियों के निर्माण में प्रत्यक्षीकरण कारक भी महत्त्वपूर्ण है। यह सत्य है कि "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मुरति देखी तिन तैसी" अर्थात् व्यक्ति जैसा उत्तेजनाओं का प्रत्यक्षीकरण करेगा उसी प्रकार से ही उस व्यक्ति की अभिवृत्तियों का निर्माण और विकास होगा।

7. सांस्कृतिक कारक (Cultural factors) : व्यक्तित्व के निर्माण में भौतिक और सामाजिक पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण योग है। अभिवृत्तियाँ जन्मजात न होकर समाज और संस्कृति के प्रभाव के कारण उत्पन्न होती हैं।

8. उद्दीपक पुनरावृत्ति और परिचितता (Stimulus Repetition and Familiarity) : उद्दीपक की पुनरावृत्ति के साथ-साथ उद्दीपक से सम्बन्धित भावनाएँ भी बार-बार जागृत होती हैं। अतः इस अवस्था में अभिवृत्तियों का निर्माण और विकास हो सकता है।

9. प्रकार्यात्मक निर्धारण (Functional Determinant) : जिस व्यक्ति का जैसा व्यक्तित्व होता है उसमें उसी प्रकार की अभिवृत्तियों का निर्माण होता है। गम्भीर और शांतिप्रिय व्यक्तियों में अभिवृत्तियाँ भिन्न प्रकार की निर्मित होंगी। इसी प्रकार झगड़ालू और दबंग व्यक्ति में भिन्न प्रकार की अभिवृत्तियाँ निर्मित होंगी। विश्वास भी अभिवृत्तियों के निर्माण और विकास को प्रभावित करता है।

Scanned with CamScanner

▶ **प्रश्न : अभिवृत्ति और व्यवहार किस प्रकार सम्बन्धित हैं? स्पष्ट करें।**

▶ ***अथवा,* अभिवृत्ति एवं व्यवहार के बीच सम्बन्ध की विवेचना करें।**

उत्तर : अभिवृत्ति एवं व्यवहार के बीच सम्बन्ध : अभिवृत्ति व्यवहार का एक मुख्य निर्धारक है। जैसे परमाणु बम के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाला व्यक्ति परमाणु सम्पन्न राष्ट्र बनाने के सम्बन्ध में सरकार के निर्णय की सराहना करेगा, जबकि वे लोग, जो परमाणु बम के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं, वे किसी न किसी ढंग से इसका विरोध करेंगे।

प्रारम्भिक शोधकर्ताओं का विचार था कि अभिवृति एवं व्यवहार के बीच सीधा सम्बन्ध है किन्तु आधुनिक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि अभिवृति तथा व्यवहार एक ही दिशा में परस्पर सम्बन्धित होंगे या नहीं यह निम्नलिखित दशाओं से निर्धारित होगा –

1. बाह्य प्रभाव न्यूनतम होने पर : बाह्य दबाव जब बहुत ही कम होता है तब अभिवृत्तियों का वास्तविक व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। जैसे कोई व्यक्ति योगाभ्यास के प्रति नकरात्मक अभिवृत्ति रखता है, परन्तु मित्रों का दबाव उसे योगाभ्यास के लिए बाध्य कर सकता है। तात्पर्य यह कि जब बाह्य कारक अधिक प्रबल नहीं होता तब अभिवृत्ति व्यवहार परस्पर सम्बद्ध होते हैं।

2. व्यवहार का अन्य द्वारा प्रेक्षण किये जाने पर : किसी व्यक्ति के व्यवहार का अन्य व्यक्ति द्वारा प्रेक्षण किये जाने की स्थिति में वह व्यक्ति प्रेक्षक की प्रत्याशा के अनुरूप व्यवहार करता है। ऐसी हालत में व्यवहार से वास्तविक अभिवृत्ति का पता नहीं चलता है।

3. अभिवृत्तियों के प्रबल होने पर : अभिवृत्तियों के प्रबल होने की स्थिति में व्यवहार में उनकी अभिवृत्तियाँ कमजोर होती हैं तो व्यवहार की देखकर उन तक पहुँचना आसान नहीं होता क्योंकि वे अभिवृत्तियाँ व्यवहार में अधिक परिलक्षित नहीं होती।

4. अभिवृत्ति के बारे में सचेत होने पर : अभिवृत्तियों के तीव्र होने पर व्यक्ति उनके प्रति अधिक सचेत होता है। ऐसी स्थिति में अभिवृत्ति और व्यवहार में संगति की सम्भावना अधिक होती है।

Scanned with CamScanner